लिपि एवं साहित्य

सुमेरियन लिपि की भांति बेबिलोनिया में भी कीलाक्षर लिपि का प्रचलन था किन्तु इनके आकार-प्रकार में परिवर्तन तथा परिवर्द्धन हुआ तथा इसकी लोकप्रियता बढ़ गयी थी। इस लिपि को समुचित राजकीय प्रश्रय प्राप्त हुआ। एक ओर साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक कृतियों में इसे प्रयुक्त किया तो दूसरी ओर शासकों ने शासकीय कार्यों में व्यवहृत कर शासकीय लिपि के रूप में प्रतिष्ठित किया। साथ ही सर्वसाधारण वर्ग के सदस्यों ने व्यावसायिक एवं व्यापारिक कार्यों में इसका उपयोग कर इसकी लोकप्रियता में अभिवृद्धि की। हम्मूरावी की प्रसिद्धि विधि-संहिता में इसके प्रयोग से इसकी शासकीय महत्ता के साथ-साथ धार्मिक महत्ता भी स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार यह लिपि सर्वव्यापी हो गयी थी।

इनकी साहित्यिक कृतियों में 'गिल्गिमेश महाकाव्य' का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें अनेक कथाएँ एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। यद्यपि इस महाकाव्य की मूलकथा सुमेरियन आख्यान से ग्रहण की गयी है लेकिन बेबिलोनियन रूपान्तरण में इसे वास्तविक महाकाव्य का रूप देकर अधिक सुग्राह्य एवं सुरुचिपूर्ण बनाया गया है। यह 12 अध्यायों में विभाजित है। तत्युगीन दूसरी कृति जगत उत्पत्ति आख्यान से सम्बन्धित 'एनुमा-एलिश' थी। इस आख्यान की लगभग एक सहस्त्र पंक्तियाँ सात पाटियों पर उत्कीर्ण प्राप्त हुई हैं। इसमें विश्व का संचालन करने वाले देवताओं के मार्दुक का स्थान श्रेष्ठ वतलाया गया है। अन्य प्रसिद्ध बेबिलोनियन आख्यानों में 'भाग्य-लेख, एटन गड़ेरिये की कथा एवं 'आदप मछुए की कथा' प्रमुख है। कथा साहित्य के अतिरिक्त देवस्त्रोत, पूजागीत एवं आभिचारिक मंत्र भी लिखे गये थे। उपनिषद इतिवृत्तों में शासकों की विजयों का वर्णन किया गया है। प्रमुख दार्शनिक कृतियों में 'लुडलुल बेल नेमकी' या 'बेबिलोनियन जॉब है। दार्शनिक कृतियों में 'द बेबिलोनियन थिऑडिसी' का भी उल्लेख किया जा सकता है। इसमें विपत्ति में पड़े एक व्यक्ति तथा उसके मित्र के बीच संवाद मिलता है। एक अन्य कृति 'डायलाग ऑव पेसिमिज्म' में स्वामी तथा दास के बीच संवाद का वर्णन है। उपदेशपरक नीति साहित्य के रूप में कौंसिल ऑव विज्डम का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें पिता अपने पुत्र को शिक्षा दे रहा था।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

बेबिलोनियन व्यापारी होने के कारण विज्ञान में सर्वाधिक प्रगति की थी। इस काल में गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, मानचित्रण एवं औषधिशास्त्र में पर्याप्त प्रगति हुई थी। यहाँ पुरोहितों को ही न्यायाधीश, प्रशासक, कृषि एवं उद्योग के संचालक, वैद्य तथा ज्योतिषी इत्यादि के कार्य सम्पन्न करने पड़ते थे। फलस्वरूप इन्होंने बहुत सी ऐसी वैज्ञानिक सिद्धान्तों का आविष्कार किया जो यूनानियों द्वारा ग्राह्य हो गये थे।

बेबिलोनियन अंक पद्धति द्विद्वाशर्मिक एवं षाष्ठिक विधि पर आधारित थी। एक लिखने के लिए जो चिह्न बनाया जाता था उसी को संख्या के अनुसार लिखकर नौ तक की संख्याएँ प्राप्त करते थे। जैसे छः लिखने के लिए एक के चिह्न को ही छः बार लिख दिया

जाता था। दस के लिए पृथक चिह्न था। इसे ही दो, तीन अथवा चार बार लिखकर क्रमशः बीस, तीस एवं चालीस की संख्याएँ प्राप्त करते थे। साठ के लिए पृथक चिह्न था। जिसकी सहायता से साठ 'एक सौ बीस' एक सौ अस्सी इत्यादि संख्यायें लिखी जाती थीं। हिसाब लगाने के लिए पहाड़ों एवं सारणियों की सहायता ली जाती थी। इनमें मूल संख्या के आधे तिहाई, चौथाई, वर्ग एवं धन के अतिरिक्त गुणन और विभाजन के विवरण भी रहते थे। रेखागणित में मिश्रित एवं टेढ़े-मेढ़े क्षेत्र का वर्गफल भी वे ज्ञात कर लेते थे। वृत्त को 360 अंशों में बांटते थे।

ज्योतिष में भी उनकी विशेष रुचि थी। आकाश में ग्रह देव तुल्य थे और उनके भाग्य विधायक थे। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र तथा शनि का तादात्म्य उन्होंने क्रमशः शमश, सिन, नर्गल, नेबु, मार्दुक, इश्तर तथा निनिवि से किया था। प्रत्येक ग्रहों की गतिविधियों के विषय में वे ज्ञान रखते थे। इन्हीं ग्रहों की गतिविधियों से वे घटनाओं का अनुमान लगाते थे। जैसे चन्द्र के नीचे होने पर कोई दूर का देश आत्मसमर्पण करने का सूचक, अर्द्धचन्द्र शासक द्वारा शत्रु विजय का द्योतक। खगोल शास्त्र जगत् में उन्होंने द्वितीय शताब्दी ई. पू. के पूर्वार्द्ध में ही शुक्र के उदय एवं अस्त के विषय में जानकारी प्राप्त कर ली। उन्होंने वर्ष को 12 चन्द्रमासों में बांटा तथा छः मास तीस दिन, छः मास उनतीस दिन का बनाये। प्रतयेक मास में चार सप्ताह, एक दिन में 12 घण्टे तथा प्रतिघंटे को तीस मिनट में विभाजित कर समय गणना करते थे। बेबिलोनियन घण्टे को बिरु कहते थे।

बेबिलोनियन आकाश में स्थित ग्रहों के मानचित्रण के साथ-साथ धरातल एवं उस पर स्थित नगरों का मानचित्र ये सरलतापूर्वक बना लेते थे। इस दृष्टि से शात-अजल्ला प्रान्त के एक मानचित्र को प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका निर्माण एक मिट्टी की तख्ती पर किया गया है। इसमें विविध रेखाओं द्वारा पर्वत, समुद्र एवं नदियों को प्रदर्शित किया गया है। स्थल-स्थल पर विभिन्न नगरों के नाम अंकित हैं। हाशिये पर उत्तर-दक्षिण दिशा निर्दिष्ट है। ये लोग निप्पुर नगर का भी मानचित्रण किये थे। यह मानचित्र जेना विश्वविद्यालय के संग्रहालय में विद्यमान है। इसमें भी नगर के देवालयों, उप्वनों, नहरों तथा प्राचीरों को अच्छी तरह प्रदर्शित किया गया है। एक दूसरे मानचित्र में इसी नगर के पड़ोसी प्रदेश का अंकन मिलता है।

बबिलोनियन औषधिशास्त्र धर्माश्रित था। हम्मूरावी औषधिशास्त्र को वैज्ञानिक विकास का आवश्यक अंग मानता था। इसीलिए इसके नियंत्रण के लिए उसकी विधिसंहिता में कुछ कठोर नियम बनाये गये थे। इस समय व्यवसायी चिकित्सकों का वर्ग आ चुका था। यह वर्ग सशुल्क चिकित्सा करता था। चिकित्सा के लिए शुल्क तथा दण्ड दोनों का निर्णय विधि-संहिता के अनुसार किया जाता था। औषधि चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा के लिए अलग-अलग शुल्क निर्धारित थे। चिकित्सकों को रोग-निदान उपचार एवं शल्य क्रिया इत्यादि बड़ी सावधानी से करनी पड़ती थी। औषधियों के मिश्रण में प्रायः कच्चे मांस, सांप के मांस, मदिरा तथा तेल, खाने की सड़ी-गली वस्तुएं, हड्डियों के चूर्ण, चर्बी, धूल तथा पशुओं एवं मनुष्यों के मलमूत्र रहते थे। वे रोग मुक्ति के लिए पूजा-पाठ, तन्त्र-मंत्र एवं अनेक प्रकार की अभिचारिक क्रियाओं का अवलम्बन लिया जाता था।

बेबीलोन की देन

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में प्राचीन बेबीलोनिया की सभ्यता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। दक्षिण पश्चिमी एशिया तथा यूनान की सभ्यता के विकास में बेबीलोनिया की सभ्यता का बहुत बड़ा हाथ है। इसने मानव सभ्यता को काफी प्रभावित किया। बेबीलोन ने माप-प्रणाली का आविष्कार किया, जिससे लम्बाई, समय, तौल आदि नापा जा सकता था, गिना जा सकता था। **विल ड्यूरेन्ट** का मानना है–"एक मास का चार सप्ताहों में, घड़ी का 12 घण्टों में घण्टे का 60 मिनट में और मिनिट का 60 सेकेण्डों में विभाजन बेबीलोन के अवशेष हैं।"

बेबीलोन ने ही गणित, ज्योतिषी, इतिहास, चिकित्सा, व्याकरण और दर्शन आदि की नींव रखी। इस सभ्यता में नगर राज्यों का विकास हुआ। **टायनवी** ने लिखा है–"ज्योतिष का प्रसार वहीं से हुआ। भारत को इनका ऋणी होना चाहिए।"

हम्बूरावी की विधि संहिता का मानव जाति के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के झूलते हुए बगीचे संसार के महान् आश्चर्यों में से एक हैं। बेबीलोन के लोगों ने महाकाव्य तथा लोकप्रिय कथाओं की की रचना की। इन्होंने ही 12 राशियों, ग्रहों एवं नक्षत्रों के नाम रखे, सप्ताह के सात दिनों का नाम रहा। संसार ने इनसे ही मीनारें, मस्जिदें एवं गुम्बज बनाना सीखा। उन्होंने एक कैलेण्डर भी तैयार किया। आज का कैलेण्डर बेबीलोनिया के कैलेण्डर पर आधारित है। इतिहासकार हर्नशा ने बेबीलोन की विश्व को देन के सम्बन्ध में लिखा है, "उनकी सभ्यता हमारे विधि-विधान, हमारे जयोतिष ज्ञान, पंचांग, समय विभाजन, तराजू-बांट, दर्जनों की गिनती में आज भी विद्यमान हैं। सम्भवतः गेहूँ की खेती, गिर्टी और पहिये का प्रयोग आदि बातें हमें उन्हीं से प्राप्त हुई हैं।" **सेवाइन ने लिखा है–**"बाट के विकास के लिए आधार भूमि के रूप में बेबीलोनियन सभ्यता के महत्त्व की अब पूरी तरह प्रशंसा की जा रही है।"

सभ्यता का पतन

जब बेबीलोनिया के शासकों ने विलासी जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया, तो 17वीं शताब्दी ई0 पू0 में केस्साइट लोगों ने बेबीलोन पर अधिकार कर लिया। इतिहासकार **जेकाइस पिरेनी** के अनुसार, "केस्साइट जाति के जंगली लोग 17वीं शताब्दी ई0 पू0 में गद्दी पर बैठे। सुमेरियन नगरों का पूर्ण पतन हो गया और बेबीलोन का सम्राट खानाबदोश लोगों से पराजित हो गया। केवल एक शहर बेबीलोन रहा, किन्तु वह भी राजधानी में नहीं।"

निस्सन्देह प्राचीन बेबीलोनिया की सभ्यता एक जीवंत सभ्यता थी। इसने यूनान और रोम के माध्यम से यूरोपीय सभ्यता को प्रभावित किया। यहीं नहीं, अरबों के माध्यम से मुस्लिम सभ्यता पर भी अपना अमिट छोड़ी। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्राचीन बेबीलोनिया की सभ्यता का विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान है। **सेवाइन** ने लिखा है, "वास्तव में बेबीलोनिया ने ज्ञान के सागर पर अज्ञात मार्गों को अंकित किया। उनके प्रबुद्ध

लोग अपने वाली कई शताब्दियों के विद्वानों के लिए मार्गदर्शक संकेत बने रहे।'' हर्नशा का मानना है–''उनकी सभ्यता हमारे विधि-विधान, हमारे ज्योतिष ज्ञान, कलैण्डर, समय विभाजन आदि में आज भी जीवित है।''

बेबिलोनियन सभ्यता का महत्व

बेबिलोनियन सभ्यता एवं संस्कृति अंग-सौष्ठव की दृष्टि से अपनी परिपक्वता को प्राप्त कर चुकी थी। इसमें राजनीतिक उतार-चढ़ाव के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विकास भी हुए थे। यह संस्कृति अपनी गरिमारश्मि से अन्य संस्कृतियों को भी आलोकित करती रहीं। इनके कुछ आविष्कार एवं अनुसन्धान वास्तव में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे। धर्म में पुरोहित को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इसी का अनुकरण कालांतर में यहूदियों द्वारा किया गया था। इनकी जिगुरतों का प्रभाव मुस्लिम मस्जिदों में देखा जा सकता है। विधि के क्षेत्र में इनका योगदान श्लाघनीय रहा है। हम्मूरावी के विधान का प्राचीन विश्व का समाज उतना ही ऋणी है। जितना आधुनिक संसार रोम का। बेबिलोनियन सभ्यता के पराभव के बाद असीरियन प्रभुता स्थापित हुई। इस प्रकार बेबिलोनियन निवासी समाज, अर्थ-व्यापार, कला-साहित्य, विज्ञानादि क्षेत्रों में अतिशय प्रगति न कर सके तथापि सुमेरियन सांस्कृतिक पक्षों के मूल तत्वों का परिष्करण करके किंचित सफलता अवश्यमेव अर्जित कर लिये थे।